आपने लिखा

शैक्षणिक संदर्भ, अंक 96 की प्रति प्राप्त हुई। प्राप्त कर गर्व की अनुभूति होती है। पहले पहल मुझे लगा की इस पत्रिका की अच्छाई क्या होगी कि शिक्षक इसे चाव से माँग कर पढ़ते हैं। उस समय तक इसे केवल देखा भर था, पढ़ा नहीं था। पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगता है जैसे सीप के मोती का संग्रह कर रहा हूँ। मुझे शिक्षकों को किसी विषय वस्तु या किसी किताब का रेफरेंस देना हो तो बेझिझक 'संदर्भ' का नाम लेने में कोई समय ज़ाया नहीं करता।

पिछले दिनों संकुल - कुर्रा, ब्लॉक - धमतरी, छत्तीसगढ़ में बच्चों का बाल मेला (रिंगी चिंगी) का आयोजन संकुल केन्द्र कुर्रा, शाला प्रबन्धन समिति तरसीवा और अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ मिलकर किया गया। सहभागी शिक्षकों की माँग थी कि यदि सम्भव हो तो रचनात्मक गतिविधियों पर आधारित आलेख प्रकाशित करें।

इस अंक में 'शिक्षकों की कलम से' वाले हिस्से में 'जवाब देने से भी ज़रूरी है सवाल पूछना', 'कई नाम थे उसके' और 'कक्षा में सीखना-सिखाना' – तीनों आलेख बेहद समसामयिक हैं और एक नवीन सोच की ओर ले जाते हैं।

सवालीराम के तहत अब जिस तरह के सवाल पूछे जा रहे हैं, काफी लाभकारी दिखने लगे हैं। निवेदन रहेगा की अंक लगातार भेजते रहें ताकि बातचीत का आधार बना रहे।

नरेन्द्र कुमार साहू
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन,
धमतरी, छत्तीसगढ़

भूल सुधार

अंक 96 में प्रकाशित एमिल ज़ोला की कहानी **'बड़ा मिचू'** *का अँग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद मनोहर नोतानी ने किया था। भूलवश उस कहानी के अन्त में अनुवादक का ज़िक्र नहीं हो पाया था।*

– सम्पादक मण्डल